प्रबोधन का युग

अति० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम०कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो० - 8051796740
दिनांक -

Age of Enlightenment - प्रबोधन का युग

वैज्ञानिक आविष्कारों और अनुसंधानों के कारण न केवल विज्ञान के क्षेत्र में, बल्कि धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि अनेक मानवीय क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर विकसित दार्शनिक या वैचारिक क्रांति को प्रबोधन या ज्ञानोदय कहते हैं। 17वीं और 18वीं शताब्दी तक के समय को इस बौद्धिक क्रांति का युग माना जाता है यों तो अनेक दार्शनिकों ने प्रबोधन के दर्शन में अपना योगदान दिया, किन्तु तीन नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं - रेने, देकार्त, जान लॉक और वाल्तेयर।

देकार्त (1596-1650 ई०) गणित का अग्रदूत होने के साथ-साथ वैज्ञानिक सिद्धांतों और प्रणाली-विज्ञान पर मनन करने और लिखने वाला पहला व्यक्ति था डिसकोर्स ऑन मेथड (Discourse-on Method) नामक उसकी पुस्तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के उदय में सीमाचिन्ह मानी जाती है यह पुस्तक निरपेक्ष तर्क का प्रबल समर्थक था। देकार्त विवेक और तर्क के द्वारा किसी को भी चुनौती दे सकता था। वह कुछ सरल और स्वयंसिद्ध सत्यों के आधार पर निगमनात्मक विवेचना के द्वारा आगे के सत्यों को सिद्ध करता था। उसने विवेक को सत्य का आधार मानकर और दुनिया को बिलकुल यांत्रिक मानकर परम्परागत मान्यताओं को चुनौती दी। इस प्रकार, देकार्त ने ईश्वरीय अभिव्यक्ति और ईश्वरीय विधान की इसाई मान्यताओं को चुनौती दी

~~देकार्त~~ देकार्त ने तो कम से कम मस्तिष्क और आत्मा को गति और विस्तार के नियमों से परे माना था। लॉक ने तो मानव-मस्तिष्क को भी यांत्रिक नियमों से परे नहीं माना। Essay Concerning Human Understanding नामक अपनी पुस्तक में लॉक ने बताया कि मनुष्य का मस्तिष्क पैदा होने के समय एक सफेद कागज के समान होता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं होता। बाद में ज्ञानेन्द्रियों और विवेक के कारण मस्तिष्क पर कुछ छाप पड़ती है। लॉक पहला व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक था। देकार्त के बुद्धिवाद का आधार था विवेक द्वारा सत्य की खोज। लेकिन लॉक अनुभववादी था जो ज्ञान की खोज अवलोकन और अनुभव के द्वारा करता था और सत्ता को मानने से इंकार कर दिया। इस प्रकार दोनों ने दोनों ने ही ईश्वरीय रहस्योद्घाटन

प्रबोधन के दर्शन में अपना भारी योगदान दिया।

प्रबोधन युग के प्रमुख दार्शनिकों में सबसे प्रभावशाली वाल्टेयर (1694-1778 ई०) थे। उनकी कौशलपूर्ण लेखनी ने लॉक के मौलिक एवं गंभीर विचारों को लोकप्रिय बनाया। उनका बहुमुखी दिमाग बाग्विदग्ध था और उनकी बुद्धि अत्यन्त तेज और प्रखर थी। जन्म से संदेही और आलोचक इस व्यक्ति ने राज्य और चर्च की सत्ता को चुनौती दी। उसने विशेषकर चर्च को अपनी आलोचना का लक्ष्य बनाया। शायद ही किसी व्यक्ति ने बौद्धिक रूप से अपने जमाने को उतना प्रभावित किया हो, जितना कि वाल्टेयर ने 18 वीं सदी में किया था। उसने कविता, नाटक, इतिहास, लेख, पत्र, और वैज्ञानिक विश्लेषण के रूप में बहुत ग्रंथों की रचना की और इनके माध्यम से तत्कालीन बुराईयों का पर्दाफाश किया।

प्रबुद्धवादी दार्शनिकों से थोड़ा अलग एक और दार्शनिक था जिसका प्रभाव शायद केवल वाल्टेयर से ही कम था। वह था रूसो (1712-78 ई०)। वह इतिहास के मौलिक चिन्तकों और आकर्षक लेखकों में एक था जिसने एक सुन्दर, निष्कलंक, और सरल प्रकृति की ओर लौट चलने के लिये जेहाद छेड़ा। स्वेच्छाचारी और भ्रष्ट नौकरशाही तथा सामाजिक शिष्टाचार के कठोर बनावटीपन एवं जटिल नियमों से पीड़ित समाज ने रूसो के विचारों का स्वागत किया। रूसो ने प्रबुद्धवादी दार्शनिकों के अनेक विचारों जैसे देववाद, यांत्रिक विश्व, मनुष्य एवं प्रकृति के अच्छाइपन पर सहमति व्यक्त की। लेकिन बुद्धि और विवेक के बारे में उसके विचार बिल्कुल भिन्न थे। रूसो ने मनोभाव, भावना और अंतर्दृष्टि पर जोर दिया, न कि शुद्ध विवेक पर। इस दृष्टिकोण से वह रोमांटिक भावना का अगुआ था। जिसके सिद्धान्तों की व्याख्या दो साल बाद हुई। उसने कहा कि मनुष्य स्वतंत्र और निष्कलंक पैदा होता है, परन्तु समाज उसे भ्रष्ट बना देता है। इसलिये मनुष्य को समाज के बनावटी बन्धनों को तोड़कर प्राकृतिक अवस्था की ओर लौट जाना चाहिए।

मांटेस्क्यु (1689-1755 ई०) सिद्धांतवादी से अधिक इतिहासकार, एक उत्सुक पाठकता राजनीतिक व्यवस्था का चतुर विश्लेषक था। उसकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है The Spirit

of laws.। यह शानदार क्रांति के बाद स्थापित अंग्रेजी सरकार का महान प्रशंसक था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग सरकार अनुकूल होती है। जैसे विशाल देशों के लिये निरंकुश राजतंत्र, फ्रांस जैसे मध्यम दर्जे के देश के लिये सीमित राजतंत्र और स्वीट्जरलैंड जैसे छोटे देश के लिये गणतंत्र उपयोगी होगा। उसने न केवल लॉक के सीमित प्रभुत्ता के सिद्धांत का समर्थन किया, बल्कि यह भी बताया कि कैसे शक्ति के पृथक्करण तथा नियंत्रण और संतुलन के नियमों द्वारा इसे प्राप्त किया जा सकता है। उसने बताया कि सरकार के तीन अंग होते हैं- कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका। इन 3 तीनों को ही एक-दूसरे से अलग और समान रूप से शक्तिशाली होना चाहिए। राजनीतिशास्त्र के प्रति मान्टेस्क्यु की यह सबसे महान देन थी।

कुछ बुद्धिवादी दार्शनिकों ने अर्थशास्त्र की ओर भी ध्यान दिया। केने (Quesnay) के नेतृत्व में कुछ फ्रांसीसी अर्थशास्त्रियों ने यह बतलाया कि अर्थशास्त्र के कुछ अपने नियम होते हैं और यह नियम है मांग और पूर्ति का। ये नियम तभी अपने सर्वोत्तम रूप में चल सकते हैं जब व्यापार को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर दिया जाए। इस सिद्धान्त को लैसज फेअर (Laissez Faire) या उन्मुक्त व्यापार का सिद्धान्त कहा जाने लगा। इस सिद्धान्त का प्रमुख प्रतिपादक एडम स्मिथ था। 1776 ई में प्रकाशित Wealth of Nations नामक पुस्तक में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था। एडम स्मिथ और फ्रांसीसी अर्थशास्त्रियों का अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों के नेता पर काफी प्रभाव पड़ा।

यह स्पष्ट है कि फ्रांस और यूरोप में चिन्तन की धाराएं भिन्न एवं परस्पर विरोधी थी। अधिकांश लोग प्रगति, विवेक, विज्ञान और सभ्यता में विश्वास करते थे। कैसो इन बातों पर संदेह करता था और वह चर्च की अच्छाईयों का प्रशंसक था। मान्टेस्क्यु चर्च को उपयोगी मानता था, लेकिन वह धर्म में विश्वास नहीं करता था, रूसो धर्म में विश्वास करता था, किन्तु इसके लिये किसी चर्च की आवश्यकता को स्वीकार नहीं करता था। मान्टेस्क्यु जबकि राजनीतिक स्वतंत्रता के लिये चिन्तित था, वाल्टेयर बौद्धिक स्वतंत्रता की गारण्टी के बदले राजनीतिक स्वतंत्रता का बलिदान कर सकता था, रूसो समाज के ओछेपन से मुक्ति

चाहता था, और ऐसी स्वतंत्रता का समर्थक था जो प्राकृतिक उन्मुक्तता के नजदीक हो। अधिकांश दार्शनिक वाल्टेयर के विचारों के निकट थे।

प्रबोधन युग के विचारों का सबसे सक्रिय केन्द्र फ्रांस था। फ्रांसीसी दार्शनिकों ने पूरे यूरोप की यात्रा की। फ्रेडरिक द्वितीय और कैथरिन द्वितीय ने फ्रांसीसी चिन्तकों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। लगभग पूरे यूरोप के उच्च वर्गों की संस्कृति एक समान और विश्वव्यापी थी, और यह संस्कृति प्रबल रूप से फ्रांसीसी थी। लेकिन, इंग्लैण्ड भी महत्वपूर्ण था। जो इंग्लैण्ड अभी तक यूरोपीय चेतना के बाहरी सीमान्त पर था, अब केन्द्र की ओर उन्मुख हुआ। मान्टेस्क्यु और वाल्टेयर ने यूरोप के लिये इंग्लैण्ड की खोज की। उन्हीं के माध्यम से बेकन, न्यूटन और लॉक के विचार और अंग्रेजी कानून और संसदीय सरकार का पूरा सिद्धान्त सामान्य बहस और टिप्पणी की विषय-वस्तु बना। ब्रिटिश सम्पत्ति एवं साम्राज्य के उदय के इन विचारों को अप्रतिरोध्य सम्मान प्रदान किया।

~~प्रबोधन का धर्म युग~~

प्रबोधन का विचार पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष था। चर्च अधिक से अधिक, समाज की एक उपयोगी संस्था मानी जाती थी। स्थापित चर्चों के स्वयं चर्चमेन धार्मिक उत्साह को संदेह की दृष्टि से देखते थे। यह सही है कि लगभग हर जगह धार्मिक जागरण का लक्षण दिखाई पड़ता है, जो ईसाई धर्म के मूल उपदेशों के नये उत्प्रेरक अनुभूति पर बल देता था, जैनसनवाद फ्रांस में कायम रहा, भक्तिवाद (Pietism) जर्मनी में विकसित हुआ, इंग्लैण्ड में मेथोडिस्ट आन्दोलन शुरू हुआ, आंग्ल-अमेरिकन उपनिवेशों में महान जागरण उत्पन्न हुआ। किन्तु इन धर्मजागरणवादी आन्दोलनों को सबसे अधिक सफलता निचले वर्गों में मिली। ऐंग्लिकन, लूथेरन और कैथोलिक चर्च अपनी शान्ति भंग नहीं करना चाहते थे। बौद्धिक नेताओं ने सारे चर्च को दरकिनार कर दिया। धर्म के प्रति सहिष्णुता या उदासीनता अब प्रगति का प्रतीक बन गया। पुराने ईसाई विचार आवश्यक नहीं रह गये। चिन्तकों ने समाज, विश्व-इतिहास, मानव नियति और अच्छे एवं बुरे के स्वरूप के बारे में ऐसे सिद्धान्त दिये, जिसमें ईसाई अवधारणाओं की कोई भूमिका नहीं थी। धरती पर सुखद एवं शालीन जीवन की ओर पीढ़ी-दर-पीढ़ी समाज की प्रगति

एक प्रबल विचार बन गया।

यद्यपि इस युग के विचारक राजकीय सुधारों में विश्वास रखते थे, किन्तु वे राष्ट्रवादी नहीं, बल्कि सर्वमुक्तिवादी (Universalists) थे वे मानवमात्र की एकता में विश्वास करते थे, और यह मानते थे कि सारे लोग एक अधिकार और विवेक के एक ही प्रकृतिक कानून के अन्तर्गत आते हैं। वे मानते थे कि सारे लोग समान रूप से इस जगति में हिस्सा लेंगे। अन्ततोगत्वा सारे लोगों में सहमति होगी और इतिहास की परिणती एक समरूप संस्था में होगी, जिसमें सभी लोग और सारे प्रजातियाँ सहभागी होंगे।

तत्कालीन सारे विचारों का केन्द्र मानव-मुक्ति थी। प्रबोधन के सारे विचार किसी-न-किसी रूप में स्वतंत्रता की समस्या से जुड़े हुए थे। मान्टेस्क्यू निरंकुश राजतंत्र के विरुद्ध गारण्टी चाहता था। रूसो सामाजिक बनावटीपन और प्रतिबन्धों से मुक्ति चाहता था। वाल्टेयर और अन्य दार्शनिकों के लिये स्वतंत्रता का अर्थ था चर्च और असहिष्णुता से मुक्ति, मस्तिष्क की स्वतंत्रता, गलतफहमी और अज्ञानता से मुक्ति जो दासता का विकल्प रूप है। मुक्ति मार्ग प्रशस्त करने के लिये, युगों की आदतों से लोगों को झकझोरने के लिये, आध्यात्मिक मुक्ति को अवरुद्ध करने वाली शक्तियों को दबाने के लिये वाल्टेयर और अन्य विचारक एक शक्तिशाली एवं अनुकूल सरकार, अर्थात् प्रबुद्ध निरंकुश राजा पर भरोसा करने के लिये तैयार थी वाल्टेयर तथा अन्य दार्शनिकों द्वारा प्रबुद्ध निरंकुशतंत्र लगभग 1750 ई० के बाद युरोप में सरकार का विशिष्ट रूप बन गया।